पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्याय 1

पौलुस और उसका धर्मविज्ञान

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय.......1
सांस्कृतिक पृष्ठभूमि.......1
यहूदी संस्कृति.......2
गैरयहूदी संस्कृति.......4
प्रेरितीय सेवकाई.......5
कार्यभार.......5
मिशन.......7
पहली यात्रा.......7
दूसरी यात्रा.......7
तीसरी यात्रा.......8
चौथी यात्रा.......8
रचनाएँ.......9
मुख्य दृष्टिकोण.......10
सुधारवाद.......10
युगान्त-संबंधी.......11
शब्दावली.......12
संरचना.......12
निहितार्थ.......16
निष्कर्ष.......18

पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्याय एक

पौलुस और उसका धर्मविज्ञान

परिचय

क्या आपका कभी ऐसा मित्र रहा है जिसके बारे में आप सोचते थे कि आप उसे अच्छी तरह जानते हैं, परन्तु फिर कुछ ऐसा घटित होता है, जो उसके एक ऐसे रूप को दिखाता है जिसे आपने पहले कभी नहीं देखा था? अक्सर कुछ ऐसा ही होता है जब मसीही लोग प्रेरित पौलुस का गम्भीरता से अध्ययन करना आरम्भ करते हैं। अब, अधिकाँश मसीही पौलुस और उसकी पत्रियों से परिचित हैं। उसकी पत्रियों पर आधारित बहुत से प्रचारों को हम सुनते हैं, और बाइबल अध्ययन में भी अक्सर हम उन पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। कई रीतियों में, वह एक परिचित मित्र सा प्रतीत होता है। परन्तु पौलुस के जीवन और धर्मविज्ञान की गहराई में उतरने वाले बहुत से मसीही अपनी खोज से चकित होते हैं।

अध्यायों की इस श्रृंखला में, हम *पौलुस के धर्मविज्ञान के केन्द्र* पर शोध करेंगे। हमने इस पहले अध्याय को, "पौलुस और उसका धर्मविज्ञान," नाम दिया है। पौलुस के धर्मविज्ञान के आवश्यक तत्वों को खोजने के लिए हम उसके जीवन और उसकी रचनाओं पर एक नजर डालते हुए इस अध्ययन का आरम्भ करेंगे।

हम तीन मुख्य विषयों को स्पर्श करेंगे। पहला, हम पौलुस की पृष्ठभूमि के कुछ महत्वपूर्ण आयामों की खोज करेंगे ताकि यह पता लगा सकें कि उन्होंने उसके अपने मसीही विश्वासों पर कैसे गहरा प्रभाव डाला। दूसरा, हम देखेंगे कि पौलुस का विश्वास एक प्रेरित के रूप में उसकी सेवकाई से कैसे संबंधित हैं। और तीसरा, हम पौलुस के मुख्य धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों की पहचान करेंगे, वे निर्णायक विचार जिन पर उसकी बहुत सी शिक्षाएं आधारित थीं जिन्हें पौलुस ने दूसरों को सिखाया। आइए पहले हम पौलुस की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को देखते हैं।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

सामान्य अनुभव से हम सब जानते हैं कि बहुत सी बातें है जो परमेश्वर के बारे में, स्वयं के बारे में, और हमारे चारों ओर के संसार के बारे में हमारे विश्वासों को प्रभावित करती हैं। किसी ने कभी भी शून्य में धर्मविज्ञान का विकास नहीं किया, और यह पौलुस के बारे में भी सत्य था। यद्यपि पवित्र आत्मा ने मसीही विश्वास के सत्य की ओर पौलुस की अगुवाई की, परन्तु पवित्र आत्मा ने पौलुस को सत्य की ओर लाने की प्रक्रिया में उसकी पृष्ठभूमि के बहुत से आयामों का भी प्रयोग किया। और इसका मतलब यह है कि यदि हम पौलुस के धर्मविज्ञान के केन्द्र को समझना चाहते हैं, तो हमें उसके जीवन से परिचित होना होगा।

दुर्भाग्यवश, पौलुस के व्यक्तिगत पालन-पोषण के बारे में हम अधिक नहीं जानते हैं। परन्तु हम यह जरूर जानते हैं कि वह दो ताकतवर सांस्कृतिक प्रभावों के अधीन रह कर बड़ा हुआ। एक तरफ, यहूदी संस्कृति ने उस पर अत्यधिक प्रभाव डाला। और दूसरी तरफ, गैरयहूदी, यूनानी-रोमी संस्कृति ने भी उस पर गहरा प्रभाव डाला।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यहूदी संस्कृति

यदि हम पौलुस पर यहूदी विरासत के प्रभाव को कम करके आँकते हैं, तो संभव है कि हम उसके धर्मविज्ञान के मुख्य बिन्दु से चूक जाएँ। हम कई तरीकों से देख सकते हैं कि यह विरासत उसके लिए कितनी महत्वपूर्ण थी। एक तरफ, नये नियम के अध्याय इसे स्पष्ट करतें है कि मसीही बनने से पूर्व पौलुस अपनी यहूदी विरासत के बारे में अत्यधिक जागरूक था। जीवन परिवर्तन से पूर्व अपनी जवानी के विषय में उसके द्वारा किया गया उसका स्वयं का वर्णन प्रकट करता है कि वह यहूदी धर्म के प्रति दृढ़ता से समर्पित था। उदाहरण के लिए, फिलिप्पियों अध्याय 3 पद 5, पौलुस ने दावा किया,

> आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्राएल के वंश, और बिन्यामीन के गोत्र का हूँ; इब्रानियों का इब्रानी हूँ; व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो फरीसी हूँ।
> *(फिलिप्पियों 3:5)*

पौलुस एक धार्मिक रूढ़िवादी था, इस्राएल की परम्पराओं को बनाए रखने और उनका पालन करने के लिए पूर्णत: समर्पित था। देखें गलातियों अध्याय 1 पद 14 में वह किस प्रकार स्वयं का वर्णन करता है:

> अपने बहुत से जातिवालों से जो मेरी अवस्था के थे, यहूदी मत में अधिक बढ़ता जाता था और अपने बापदादों की परम्पराओं के लिए बहुत ही उत्साही था।
> *(गलातियों 1:14)*

वास्तव में, परिवर्तन से पूर्व यहूदी मत के लिए पौलुस का उत्साह इतना अधिक था कि उसने मसीही कलीसिया को यह कह कर बहुत ही हिंसात्मक रूप से सताया कि यह यहूदी अपधर्म और गलत शिक्षा है। इससे बढ़कर, पौलुस यहूदी मत की परम्पराओं में उच्च शिक्षित था। प्रेरितों के काम अध्याय 22 पद 3 के अनुसार, वह यरूशलेम के सर्वाधिक प्रसिद्ध रब्बियों में से एक, गमलीएल का शिष्य रह चुका था। किसी अबोध कट्टरवादी के विपरीत, पौलुस यहूदी धर्मविज्ञान और पवित्रशास्त्र की अपनी समझ में उच्च प्रशिक्षण प्राप्त और परिष्कृत था।

पौलुस की यहूदी संस्कृति केवल मसीही बनने से पूर्व ही उसके लिए महत्वपूर्ण नहीं थी; अपने परिवर्तन के बाद भी वह अपनी उसी विरासत का गहरा आभारी बना रहा। उदाहरण के लिए, एक मसीही के रूप में भी वह बहुत से यहूदी रिवाजों को मानता रहा। जैसा 1 कुरिन्थियों अध्याय 9 पद 20 में उसने कहा;

> मैं यहूदियों के लिए यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊँ। जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उनके लिए मैं व्यवस्था के अधीन बना। *(1 कुरिन्थियों 9:20)*

नये नियम में बहुत से वचन हैं जब मसीही पौलुस ने सावधानी से अपने पुरखों की परम्पराओं का पालन किया। यहूदियों द्वारा मसीह पर अपने विश्वास के कारण भयानक रूप से सताए जाने के बाद भी, पौलुस की जातिगत पहचान और वफादारी इतनी दृढ़ थी कि वह उस समय भी उन्हें बचाना चाहता था। उदाहरण के लिए, रोमियों अध्याय 9 पद 2 से 5 में उसने लिखा:

> मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है, क्योंकि मैं यहाँ तक चाहता था कि अपने भाइयों के लिए जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं, स्वयं ही मसीह से शापित हो जाता। वे इस्राएली हैं, और लेपालकपन का अधिकार और महिमा और वाचाएँ और व्यवस्था और उपासना और प्रतिज्ञाएँ उन्हीं की हैं। पुरखे भी

> उन्हीं के हैं, और मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ। सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयगु धन्य हो। *(रोमियों 9:2-5)*

पौलुस की यहूदी पृष्ठभूमि के महत्व को ध्यान में रखते हुए, हम अब यह प्रश्न पूछ सकते हैं: पौलुस की पृष्ठभूमि ने किस प्रकार उसके मसीही धर्मविज्ञान पर प्रभाव डाला? बहुत सी रीतियों में, यह प्रभाव पौलुस की पत्रियों में लगभग प्रत्येक पृष्ठ पर व्यक्त है, परन्तु दो बातें स्मरण रखने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

पहली, एक यहूदी तथा एक यहूदी मसीही दोनों के रूप में, पौलुस पुराने नियम के पवित्र शास्त्रों के अधिकार पर विश्वास करता था। उसने किसी पूर्वधारणा के बिना उन पर भरोसा किया और उनके अधीन रहा। पौलुस कभी किसी ऐसी बात पर विश्वास नहीं करता जो पुराने नियम की शिक्षाओं के विरूद्ध थी। दुर्भाग्यवश, कलीसिया के इतिहास के विभिन्न समयों में, और हमारे अपने समय में भी, कुछ धर्मविज्ञानियों ने यह सुझाव दिया है कि पौलुस ने पुराने नियम की शिक्षाओं को त्याग दिया और उन्हें मसीह में लाये अपने नये विश्वास से बदल दिया। परन्तु यह बात सच्चाई से कोसों दूर है। पुराने नियम के इस्राएल के एकेश्वरवाद में पौलुस की जड़ें बहुत गहरी थीं, और वह इब्रानी पवित्रशास्त्रों की नैतिक माँगों को पूरे मन से मानता था। पौलुस के बारे में हम चाहे और कुछ भी कहें, पर एक बात हम निश्चित रूप से जानते हैं कि उसने क्षण भर के लिए भी कभी यह विश्वास नहीं किया कि उसके मसीही विश्वास ने उसके और पुराने नियम के बीच दूरी पैदा कर दी थी। इसके विपरीत, मसीह के लिए उसके समर्पण ने इन पवित्रशास्त्रों के लिए उसकी भक्ति को और अधिक गहरा किया। देखें पौलुस 2 तिमुथियुस अध्याय 3 पद 14 में पुराने नियम के संबंध में अपने आश्रित तिमुथियुस को क्या निर्देश देता है:

> पर तू उन बातों पर जो तू ने सीखीं हैं और विश्वास किया है, यह जानकर दृढ़ बना रह कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा है, और बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। *(2 तिमुथियुस 3:14)*

इब्रानी बाइबल निरन्तर पौलुस की बाइबल बनी रही।

दूसरे स्थान में, पौलुस ने इस यहूदी विश्वास को भी दृढ़ता से थाम रखा कि परमेश्वर एक दिन दाऊद के वंशज, मसीह को भेजेगा, जो इस्राएल के कष्टों का अन्त करेगा और परमेश्वर के राज्य का गैरयहूदी देशों में विस्तार करेगा। वास्तव में, पौलुस का मसीहियत में आने का कारण उसका यह विश्वास था कि यीशु ही वह चिर-प्रतीक्षित मसीह था। इसीलिए पौलुस यीशु को ख्रिस्त, या *ख्रिस्तुस* कहने में नहीं हिचकता है, जो इब्रानी शब्द *मशियाख़* या मसीह का यूनानी अनुवाद है। पौलुस मसीहियत को यहूदी मत के प्रतिस्थापन के रूप में नहीं देखता था। बल्कि, उसका विश्वास था कि मसीहियत यहूदी मत की शाखा है उसने पहचान लिया कि यीशु ही सच्चा मसीह था।

यहूदी विश्वास के ये आधार - पवित्रशास्त्रों के प्रति पूर्ण समर्पण, और मसीह में आशा - पौलुस के मसीही दृष्टिकोण के आवश्यक आयाम थे। ऐसी ही और भी बहुत सी रीतियों में, पौलुस के केन्द्रिय मसीही विश्वास उसकी यहूदी विरासत पर निर्भर थे।

परन्तु पौलुस केवल अपनी यहूदी विरासत से ही प्रभावित नहीं हुआ था। पवित्र आत्मा ने पौलुस के धर्मविज्ञान को आकार देने के लिए गैरयहूदी संस्कृति के साथ उसके सम्पर्क का भी प्रयोग किया।

गैरयहूदी संस्कृति

सबसे पहले, हमें ध्यान देना चाहिए कि अपने सम्पूर्ण जीवन में, पौलुस केवल यहूदी पलिश्त में ही नहीं रहा था, बल्कि अपने जीवन में विभिन्न समयों पर वह गैरयहूदियों के स्थानों में भी रहा था। प्रेरितों के काम अध्याय 21 पद 39 के अनुसार, पौलुस गैरयहूदी नगर, किलकिया के तरसुस का था। प्रेरितों के काम अध्याय 22 पद 3 में हम पढ़ते हैं कि उसका पालन-पोषण यरूशलेम में हुआ था। परन्तु प्रेरितों के काम अध्याय 9 पद 30 और अध्याय 11 पद 25 संकेत देते हैं कि एक वयस्क के रूप में पौलुस पुन: तरसुस में रहा था।

इसके अतिरिक्त, गैरयहूदी संसार से पौलुस के सम्पर्क में बढ़ोतरी इस तथ्य से भी हुई कि उसे पूर्ण रोमी नागरिकता प्राप्त थी। वास्तव में, प्रेरितों के काम अध्याय 22 पद 28 के अनुसार, उसने अपनी नागरिकता को खरीदा नहीं था, बल्कि वह उस में जन्मा था। प्रेरितों के काम की पुस्तक में कई अवसरों पर, हम पढ़ते हैं कि पौलुस ने सुसमाचार को बढ़ावा देने और अपना बचाव करने के लिए रोमी नागरिक के रूप में अपने अधिकारों का सक्रियता से दावा किया।

इससे आगे, गैरयहूदी कलीसियाओं को लिखी पौलुस की पत्रियाँ मसीही सुसमाचार की खातिर गैरयहूदी रिवाजों को मानने की इच्छा को प्रदर्षित करती हैं। 1 कुरिन्थियों अध्याय 9 पद 21 में, उसने एक असाधारण घोषणा की;

> व्यवस्थाहीनों के लिए मैं ... व्यवस्थाहीन सा बना कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊँ। *(1 कुरिन्थियों 9:21)*

पौलुस गैरयहूदी संस्कृति को इतनी अच्छी तरह से जानता था कि वह मसीह की व्यवस्था का पालन करते समय अपने व्यवहार को गैरयहूदी रिवाजों के अनुरूप बनाने की महीन रेखा पर चलने में सक्षम था।

अन्ततः, पौलुस ने यह भी दिखाया कि उसे परिष्कृत गैरयहूदी साहित्य का भी ज्ञान था। प्रेरितों के काम अध्याय 17 पद 28 और तितुस अध्याय 1 पद 12 जैसे पद्यांशों में, पौलुस ने वास्तव में गैरयहूदी दार्शनिकों का सन्दर्भ दिया और उनका हवाला भी दिया । वह यूनानी-रोमी संसार के दर्शनशास्त्रों और धर्मों में अच्छी तरह शिक्षित था।

अब, हमें स्वयं से पूछना है: पौलुस की गैरयहूदी संस्कृति की जानकारी का उस पर क्या प्रभाव पड़ा? गैरयहूदी संस्कृति के साथ उसके सम्पर्क ने कैसे उसे प्रभावित किया? सबसे पहले, हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि गैरयहूदी संस्कृति की पौलुस की जानकारी के कारण - जैसा कुछ ने कहा है - उसने गैरयहूदियों के लिए ग्रहणयोग्य बनाने के लिए मसीहियत में बदलाव नहीं किया था। वह अपनी मूल स्थिति में विशिष्टत: यहूदी बना रहा। फिर भी, गैरयहूदी संसार के साथ सम्पर्क ने कम से कम दो प्रकार से पौलुस को प्रभावित किया। एक तरफ, इसने उसे कलीसिया के बाहर गैरयहूदियों में सेवकाई करने के लिए तैयार किया। वह बहुत से अन्य लोगों से बेहतर रीति से गैरयहूदियों के मूल्यों और विश्वासों को जानता था, और सुसमाचार को उन तक प्रभावशाली ढंग से पहुँचाने के लिए अच्छी तरह तैयार था। इसी कारण रोमियों अध्याय 11 पद 13 में हम पढ़ते हैं कि पौलुस स्वयं को, "गैरयहूदियों के लिए प्रेरित," कहता है।

इससे बढ़कर, पौलुस कलीसिया के भीतर गैरयहूदियों के मध्य सेवकाई करने, और उनके लिए लड़ने के लिए भी तैयार था। वास्तव में, पौलुस की गैरयहूदी सेवकाई ने उसे पहली-सदी की कलीसिया के सर्वाधिक गम्भीर विवादों में से एक में उलझा दिया; यह प्रश्न कि गैरयहूदी विश्वासियों पर खतना करवाने के लिए दबाव डाला जाए या नहीं। प्रेरितों के काम 15 के अनुसार, पौलुस ने प्रेरितों और पुरनियों को इस बात के लिए मनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई कि गैरयहूदी विश्वासियों को खतना करवाने की आवश्यकता नहीं है। और गलातियों की अपनी पत्री में, उसने खतना न कराने के गैरयहूदियों के अधिकार

का दृढ़ता से बचाव किया। परन्तु यह एक विवाद कलीसिया में गैरयहूदियों के लिए पौलुस की अत्यधिक वृहद् चिन्ता का प्रतिनिधित्व करता था। जब उसके समय के यहूदी मसीही गैरयहूदियों को दूसरे दर्जे के विश्वासी मानते थे, पौलुस ने बल दिया कि मसीह ने यहूदियों और गैरयहूदियों को विभाजित करने वाली दीवार को ध्वस्त कर दिया था। जैसा उसने गलातियों अध्याय 3 पद 28 और 29 में लिखा:

> अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो। *(गलातियों 3:28-29)*

पौलुस की बहुत सी पत्रियों का एक केन्द्रिय विषय था कि यीशु ने गैरयहूदियों के लिए उद्धार के द्वार को खोल दिया था इसलिए कोई भी गैरयहूदी जो मसीह में था वह पूर्णत: यहूदी माना जाता था और परमेश्वर की नजरों में व्यवस्था को मानने वाला था।

अत: हम देखते हैं कि यहूदी और गैरयहूदी संस्कृतियों में पौलुस की पृष्ठभूमि ने उसे बहुत सी रीतियों में प्रभावित किया। और इस दोहरी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, हम यह देखने की स्थिति में हैं कि पौलुस का धर्मविज्ञान कैसे उसकी सेवकाई से संबंधित था।

प्रेरितीय सेवकाई

जैसा हम सीखेंगे, कलीसिया के लिए पौलुस की सेवा ने निरन्तर उसके धर्मविज्ञान के लिए सन्दर्भ बिन्दू उपलब्ध करवाया और उसके विश्वास पर गहरा प्रभाव डाला। और इस कारण, हमें उसकी सेवकाई के कई आयामों को देखना चाहिए। हम विशेषत: पौलुस की सेवकाई के तीन पहलुओं को देखेंगे: उसका प्रेरित का पद, प्रेरित के रूप में उसका मिशन, और प्रेरित के रूप में उसकी रचनाएँ।

कार्यभार

कम से कम बीस अवसरों पर, पौलुस ने स्वयं का एक “प्रेरित” के रूप में वर्णन किया, अक्सर इस रूप में कि वह “यीशु मसीह का प्रेरित” था। प्रेरित होने का यह दावा महत्वपूर्ण था क्योंकि मसीह ने प्रेरितों को इसलिए नियुक्त किया था कि वे उसकी खातिर पूर्ण अधिकार के साथ कलीसिया से बात करें। अब, हम सब जानते हैं कि पौलुस उन मूल प्रेरितों में से एक नहीं था जिन्हें यीशु ने संसार में अपनी सेवकाई के दौरान चुना था। फिर भी, पौलुस ने मसीह के अधिकृत प्रतिनिधि होने का दावा किया। पौलुस ने बल दिया कि उसके प्रेरित होने का अधिकार मूल प्रेरितों के समान था। परन्तु यह कैसे संभव था? उत्तर इस तथ्य में है कि पौलुस प्रेरित बनने के लिए निर्धारित योग्यताओं को पूरा करता था।

जब प्रेरित पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो पतरस ने निर्णय लिया कि एक नये प्रेरित को यहूदा का स्थान लेना चाहिए। इसलिए पतरस ने बताया कि मसीह के अधिकृत प्रेरितों को तीन मापदण्ड पूरे करने थे। पहला, प्रेरितों के काम अध्याय 1 पद 21 के अनुसार, उसने संसार में मसीह की सेवकाई से दौरान सीधे मसीह से शिक्षा पाई हो। दूसरा, प्रेरितों के काम अध्याय 1 पद 22 में हम पढ़ते हैं कि वे मसीह के पुनरूत्थान के गवाह हों। और तीसरा, प्रेरितों के काम अध्याय 1 पद 23 से 26 में हम पाते हैं कि नये प्रेरितों को स्वयं प्रभु के द्वारा उस पद के लिए चुना गया हो।

परन्तु पौलुस? पहली नजर में, वह प्रेरित बनने के लिए पहले मापदण्ड को पूरा करने में असफल हो जाता है: आखिर, मसीह द्वारा संसार में सेवकाई के दौरान वह मसीह के पीछे नहीं चला था। परन्तु

करीब से देखने पर उसकी योग्यता प्रकट होती है। गलातियों अध्याय 1 पद 11 से 18 में, पौलुस ने बताया कि मन परिवर्तन के तुरन्त बाद उसने तीन वर्ष अरब मरूभूमि में व्यतीत किए। उसने इस समयावधि का वर्णन यह दिखाने के लिए किया कि लगभग उस समय के बराबर थी जितना समय दूसरे प्रेरितों ने यीशु के साथ व्यतीत किया था। उन वर्षों के दौरान, स्वयं यीशु ने पौलुस को सुसमाचार सिखाया। गलातियों अध्याय 1 पद 11 और 12 में पौलुस के वचनों को देखें:

> जो सुसमाचार मैं ने सुनाया है, वह मनुष्य का नहीं। क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुँचा, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के प्रकाशन से मिला। *(गलातियों 1:11-12)*

पौलुस ने दूसरे मापदण्ड को भी पूरा किया। प्रेरितों के काम अध्याय 9 पद 1 से 6 में, हम पढ़ते हैं कि पौलुस ने यथार्थ में दमिश्क के मार्ग पर जी उठे मसीह को देखा। उसने पुनरूत्थान प्राप्त उद्धारकर्ता को देखा था। अन्ततः, प्रेरितों के काम अध्याय 9 पद 15 के अनुसार, स्वयं यीशु ने पौलुस को इस पद पर नियुक्त किया:

> वह तो गैरयहूदियों और राजाओं और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रकट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है। *(प्रेरितों के काम 9:15)*

और पौलुस के प्रेरित होने की वैधता के बारे में कोई सन्देह न हो, इसलिए गलातियों अध्याय 2 पद 7 और 8 हमें बताते हैं कि मूल प्रेरितों ने उसकी बुलाहट और उसके प्रेरित होने की पुष्टि की। जैसा पौलुस ने लिखा,

> परन्तु इसके विपरीत जब उन्होंने देखा कि जैसा खतना किए हुए लोगों के लिए सुसमाचार का काम पतरस को सौंपा गया, वैसा ही खतनारहितों के लिए मुझे सुसमाचार सुनाना सौंपा गया। क्योंकि जिसने पतरस से खतना किए हुआं में प्रेरिताई का कार्य बड़े प्रभाव सहित करवाया, उसी ने मुझ से भी गैरयहूदियों में प्रभावशाली कार्य करवाया। *(गलातियों 2:7-8)*

दूसरे प्रेरितों ने पहचान लिया कि पौलुस की प्रेरिताई पतरस की प्रेरिताई के समान थी। देखें पतरस 2 पतरस अध्याय 3 पद 15 और 16 में क्या कहता है:

> ...हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है। वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है, जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उनके अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की अन्य बातों की तरह खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं। *(2 पतरस 3:15-16)*

पतरस के अनुसार, पौलुस की पत्रियाँ “दूसरे पवित्रशास्त्रों” के बराबर हैं।

आरम्भिक कलीसिया में बहुत से झूठे शिक्षक थे जो पौलुस की शिक्षाओं का विरोध करते थे। अतः, इन झूठे शिक्षकों का सामना करने के लिए नये नियम ने यह स्पष्ट किया कि पौलुस एक वैध प्रेरित था। इससे बढ़कर, पौलुस ने कलीसिया में ऐसे दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया जिन्हें समझना कठिन था और स्वीकार करना और भी मुश्किल था। फिर भी, मसीह के राजदूत के रूप में अपनी भूमिका को निभाते समय, पौलुस दूसरे प्रेरितों के समान अधिकार से बोलता था और पवित्रशास्त्र के अधिकार के साथ लिखता था। कोई चाहे कुछ भी क्यों न कहे, लेकिन उनके दृष्टिकोण पौलुस की शिक्षाओं के प्रमाप द्वारा जाँचे जाते थे। उसकी रचनाएँ स्वयं मसीह के अधिकार को रखती हैं। हम पौलुस के पीछे चले बिना

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मसीह के पीछे नहीं चल सकते हैं। आज भी विश्वासयोग्य मसीहियों का धर्मविज्ञान पौलुस के धर्मविज्ञान के अनुरूप होना चाहिए।

मिशन

अब पौलुस के प्रेरित होने के अधिकार को ध्यान में रखते हुए, हमें उसके प्रेरिताई के मिशन को देखना चाहिए। एक प्रेरित के रूप में पौलुस ने क्या किया? उसका कार्य क्या था? हम पौलुस की तीन मिशनरी यात्राओं और उसकी रोम की यात्रा को देखकर उसके द्वारा किए गए कार्य के प्रकार को समझ सकते हैं। आइए हम मसीह के प्रेरित के रूप में उसकी पहली यात्रा से शुरूआत करते हैं।

पहली यात्रा

हम प्रेरितों के काम 13 और 14 अध्यायों में पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के बारे में देखते हैं। इसका आरम्भ तब हुआ जब परमेश्वर ने सीरियाई अन्ताकिया की कलीसिया को पौलुस और बरनबास को एक विशेष कार्य के लिए अलग करने की आज्ञा दी। इसके तुरन्त बाद, पवित्र आत्मा इन लोगों को कुप्रुस के द्वीप में ले गया। वहाँ सेवकाई के कई अवसरों के बाद, वे सुसमाचार प्रचार की यात्रा में एशिया माइनर की ओर बढ़े। पौलुस की रीति थी कि वह सबसे पहले यहूदी आराधनालयों में सुसमाचार सुनाता था। परन्तु यहूदियों के अत्यधिक विरोध के पश्चात्, वह गैरयहूदियों के मध्य भी प्रचार करने लगा।

इस यात्रा में पौलुस ने सफलतापूर्वक कई कलीसियाओं की स्थापना की जिसमे बहुत सी गलातिया के क्षेत्र में भी थी। पूर्व में दिरबे तक यात्रा करने के पश्चात्, पौलुस और बरनबास वापस लौटते हैं। वे गलातिया के नगरों से यात्रा करते हुए अन्ततः जहाज से अपने घर लौटते हैं।

मसीह के प्रेरित के रूप में पौलुस की पहली यात्रा तुलनात्मक रूप में छोटी और आसान थी। परन्तु अपनी दूसरी यात्रा में वह पलिश्त के देश से कहीं आगे निकल गया।

दूसरी यात्रा

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा प्रेरितों के काम 15:36 से 18:22 में आती है। यह यात्रा उस समय शुरू हुई जब प्रेरितों और यरूशलेम की कलीसिया के अगुवों ने अन्ताकिया, सीरिया, किलकिया और गलातिया की कलीसियाओं को एक पत्र पहुँचाने के लिए पौलुस और बरनबास को चुना, जिस में लिखा था कि गैरयहूदी विश्वासियों को उद्धार पाने के लिए खतना करवाने या मूसा की व्यवस्था को मानने की आवश्यकता नहीं थी।

अब, यात्रा शुरू होने से पहले ही, पौलुस का बरनबास के साथ मनमुटाव होता है और वे दोनों अलग हो जाते हैं और पौलुस सीलास को साथ लेता है। ये दोनों गलातिया पहुँचने तक, पहले सीरिया से होकर जाते हैं और फिर किलकिया से यात्रा करते हैं। उस क्षेत्र के लुस्त्रा में तिमुथियुस यात्रा में पौलुस के साथ शामिल होता है।

जब पौलुस आगे बढ़ता है, वह उत्तर में आसिया और बिथुनिया में सुसमाचार प्रचार करना चाहता था, परन्तु पवित्र आत्मा ने उसे रोक दिया। अतः, पौलुस समुद्र किनारे के नगर त्रोआस में आता है। वहाँ पवित्र आत्मा द्वारा रोके जाने का कारण पौलुस के प्रसिद्ध "मकिदूनिया के दर्शन" से स्पष्ट हो जाता है। इस दर्शन में, एक व्यक्ति उससे विनती करता है कि वह यूनान के उत्तरी क्षेत्र, मकिदूनिया में सुसमाचार प्रचार करे। अतः पौलुस और उसके साथी इस दर्शन के प्रत्युत्तर में तुरन्त उस क्षेत्र में जाते हैं। पौलुस ने फिलिप्पी और उत्तर में थिस्सलुनीके सहित, यूनान में बहुत सी कलीसियाओं की स्थापना की।

अन्त में, वह दक्षिण की ओर बढ़ता है, एथेन्स में जाता है और कुरिन्थ में कलीसिया स्थापित करता है। पौलुस फिर इफिसुस में गया, और कुछ समय के बाद, वह वापस पलिश्त में लौटा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तीसरी यात्रा

दूसरी मिशनरी यात्रा के बाद जल्दी ही पौलुस तीसरी यात्रा पर निकला जिसमें उसने पुन: सुदूर पश्चित तक की यात्रा की। पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के बारे में प्रेरितों के काम 18:23 से 21:17 में बताया गया है। इन यात्राओं में पौलुस सीरियाई अन्ताकिया से गलातिया और फ्रूगिया गया, और फिर उसने इफिसुस में एक फलवन्त सेवकाई को स्थापित किया। इसके बाद, उसने कई महीनों तक यूनान में उत्तर से दक्षिण और पुन: उत्तर की यात्रा की। वह उन कलीसियाओं में गया जिन्हें उसने अपनी पिछली यात्रा में उस क्षेत्र में स्थापित किया था। फिर प्रेरित थल और समुद्र द्वारा पुन: यरूशलेम की ओर चला।

जब पौलुस अपनी तीसरी यात्रा के बाद यरूशलेम लौटा, तो यहूदियों ने उस पर राजद्रोह का झूठा आरोप लगाया और रोमियों ने उसे गिरफ्तार कर लिया। दो वर्ष बन्दीगृह में रहने के पश्चात्, पौलुस ने अपने मामले को कैसर के सामने लाने के लिए अपने रोमी नागरिक के अधिकारों का दावा किया। कैसर से की गई इस अपील के कारण चौथी यात्रा की शुरूआत हुई, जो उसे रोम में ले गई।

चौथी यात्रा

इस यात्रा की घटना प्रेरितों के काम 27 और 28 अध्यायों में दर्ज है। पौलुस ने इस यात्रा को अधिकाँशत: जहाज के द्वारा किया। क्रेते और मिलेतुस द्वीप के बीच, एक भयानक तूफान ने उस जहाज को पूर्णत: नष्ट कर दिया जिस पर पौलुस और अन्य बन्दी यात्रा कर रहे थे। नाविक, सैनिक, पौलुस और उसके साथी रोम जाने का मार्ग निकलने तक तीन महीने मिलेतुस द्वीप पर रहे। पौलुस रोम में 60 से 62 ईस्वी तक नजरबन्द रहा। इस समय के दौरान वह स्वतंत्रता से सेवकाई करने में सक्षम था।

परम्परा हमें बताती है कि पौलुस को नीरो ने बरी कर दिया था, और फिर वह सुसमाचार का प्रचार करते हुए स्पेन की ओर गया। तिमुथियुस और तीतुस की पत्रियों के कुछ प्रमाण भी सुझाव देते हैं कि वह पूर्व की ओर गया, और कलीसियाओं की स्थापना की और उन्हें दृढ़ करता रहा। परन्तु संभवत: 65 ईस्वी या उसके कुछ समय बाद नीरो ने पुन: पौलुस को बन्दी बना लिया और अन्तत: उसने प्रेरित को मौत के घाट उतार दिया।

यरूशलेम और रोम के बीच के क्षेत्र पर एक सरसरी नजर डालने से यह प्रकट होता है कि पौलुस बहुत से विविध स्थानों पर गया, पच्चीस से अधिक नगरों में हजारों लोगों से सम्पर्क किया। उसने इतनी लम्बी यात्राएँ की इस तथ्य से हमें क्या सीखना है? यह हमें पौलुस के धर्मविज्ञान के केन्द्र के बारे में क्या बताती हैं?

कहने की आवश्यकता नहीं है कि हम पौलुस की मिशनरी यात्राओं से उसके धर्मविज्ञान के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। परन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण बातों में से एक जो हम सीखते हैं वह यह है कि पौलुस के धर्मविज्ञान ने उसे एक आराम कुर्सी पर बैठने वाले धर्मविज्ञानी बनने की अनुमति नहीं दी। निश्चित रूप से, पौलुस उच्च शिक्षित था और अत्यधिक बुद्धिमान था। परन्तु उसका धर्मविज्ञान उसे बलिदान और सेवा भरे जीवन की ओर ले गया। अत: जब हम पौलुस के धर्मविज्ञान के केन्द्र को देखते हैं, तो हमें ऐसे विचारों या विश्वासों से समझौता नहीं करना चाहिए जो व्यवहारिक जीवन से अलग हों। हमें कुछ ऐसा खोजना चाहिए जो मौलिक हो और जीवन को रूपान्तरित करने वाला हो। जब हम पौलुस के धर्मविज्ञान को उचित रूप से समझते हैं, तो यह हमारा कलीसिया, और संसार के प्रति मसीह की कट्टर सेवा के जीवनों में हमारा मार्गदर्शन और प्रेरित करेगा, जैसे इसने पौलुस का मार्गदर्शन किया था ।

अब हम उसकी सेवकाई के तीसरे पहलू की ओर बढ़ने के लिए तैयार हैं: प्रेरित के रूप में उसकी रचनाएँ, या नये नियम की पत्रियाँ।

रचनाएँ

चूँकि पौलुस निरन्तर व्यवहारिक सेवकाई की खाईयों में रहता था, इसलिए वह उन कलीसियाओं को परेशान करने वाले विशिष्ट मुद्दों से परिचित था जहाँ वह जाता था। अब आप कल्पना कर सकते हैं कि गलातिया की समस्याएँ इफिसुस के मुद्दों से अलग थीं। और इफिसुस की समस्याएँ कुरिन्थ की चुनौतियों से अलग थीं। हर स्थान जहाँ वह गया अलग था। परिणामस्वरूप, जब पौलुस ने अपनी पत्रियों को लिखा उसकी चिन्ता उन परिस्थितियों की विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करने की थी।

नये नियम में तेरह पत्रियाँ हैं जिन्हें पौलुस ने अपनी सेवकाई में विभिन्न समयों पर लिखा। अब चूँकि पौलुस की पत्रियाँ इतनी प्रासंगिक थीं, यानि, विशिष्ट समस्याओं को संबोधित करने के लिए लिखी गई थीं, इसलिए कोई भी पत्री उसके सम्पूर्ण धर्मविज्ञान को एक क्रमबद्ध या प्रणालीबद्ध रूप में प्रस्तुत नहीं करती है। इसके विपरीत, उसकी पत्रियों में उसके धर्मविज्ञान के पासबानी प्रयोग शामिल हैं। अधिकाँश मामलों में यह स्पष्ट है कि पौलुस ने अपनी पत्रियाँ कलीसिया में विशिष्ट मुद्दों को संबोधित करने के लिए लिखीं, और हम इस वास्तविकता को आगामी अध्यायों में विस्तार से देखेंगे।

परन्तु यह समझाने के लिए कि यह कितना सच है, आइए एक पल के लिए हम रोमियों की पुस्तक के बारे में सोचें। बहुत से मसीहियों ने रोमियों की पुस्तक को गलती से पौलुस के धर्मविज्ञान की एक प्रणालीबद्ध, अमूर्त रूपरेखा के रूप में माना है। और इसलिए उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि पुस्तक के सतही विषय पौलुस की धर्मविज्ञानी प्रणाली के केन्द्र का निर्माण करते हैं। परन्तु रोमियों की एक करीबी जाँच प्रकट करती है कि पौलुस ने इस पुस्तक को भी विशेष समस्याओं को संबोधित करने के लिए ही लिखा था। पौलुस द्वारा उन्हें यह पत्री लिखने के मुख्य कारणों में से एक रोम में यहूदी और गैरयहूदी विश्वासियों के बीच संबंधों को स्थिरता प्रदान करना था।

रोमियों की संरचना पर एक नजर इस पासबानी केन्द्र को पूर्णत: स्पष्ट करती है। पहले तीन अध्यायों में, पौलुस ने यह साबित करने पर ज़ोर लगाया कि यहूदी और गैरयहूदी दोनों पापी हैं, और किसी के पास दूसरे पर श्रेष्ठता का दावा करने का अधिकार नहीं है। 4 से 8 अध्यायों में उसने बल दिया कि कैसे परमेश्वर ने यहूदियों और गैरयहूदियों के लिए एक ही प्रकार से उद्धार उपलब्ध करवाया है। यहूदी और गैरयहूदी परमेश्वर के सामने समान हैं। 9 से 11 अध्यायों में पौलुस ने मानवीय इतिहास के लिए परमेश्वर की योजना में यहूदियों और गैरयहूदियों की पूरक भूमिकाओं पर ध्यान दिया। फिर, इन सैद्धान्तिक विषयों पर बल देने के पश्चात्, 12 से 16 अध्यायों में उसने व्यावहारिक मसीही जीवन के कई मुद्दों का सामना किया जो यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच संघर्षों से निकटता से जुड़े थे।

उदाहरण के लिए, अध्याय 12 में उसने बल दिया कि अपनी विविधता के बावजूद, मसीहियों को एकीकृत देह के रूप में कार्य करना चाहिए। अध्याय 13 में उसने यह कहकर स्थिरता को बढ़ावा दिया कि मसीहियों को गैरयहूदी के अधिकारियों की भी अधीनता में रहना चाहिए। और 14 से 16 अध्यायों में, अपनी पत्री को समाप्त करने से पूर्व, पौलुस ने यहूदी और गैरयहूदी रिवाजों के संबंध में यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच आपसी समझ की आवश्यकता पर ध्यान दिया।

रोमियों को लिखी पौलुस की पत्री का यह संक्षिप्त रेखाचित्र दिखाता है कि पौलुस की यह इच्छा नहीं थी कि रोमियों की पत्री उसके विश्वासों का अमूर्त कथन बने। इसके विपरीत, यह पुस्तक मुख्यत: मसीही कलीसिया में यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच संबंधों में पासबानी मुद्दे का उत्तर देती है। रोमियों की पत्री कुछ अत्यधिक विशिष्ट आवश्यकताओं पर पौलुस के धर्मविज्ञान को लागु करने हेतु थी।

हमारा यह विश्वास उचित है कि पौलुस के पास एक उचित रूप से निर्मित, धर्मविज्ञानी विश्वासों का तार्किक समूह था, या जिसे हम प्रणालीबद्ध धर्मविज्ञान कह सकते हैं। परन्तु पौलुस के धर्मविज्ञान की प्रणाली अलिखित रही, यद्यपि यह उसकी पत्रियों का आधार थी। जहाँ तक हम जानते हैं, पौलुस के

धर्मविज्ञान की प्रणाली कभी पूर्णत: लिखित रूप तक नहीं पहुँची। लेकिन, उसके द्वारा लिखित पत्रियों के आधार पर हम एक बड़ी सीमा तक उसका पुनर्निर्माण कर सकते हैं।

पौलुस की धर्मविज्ञानी प्रणाली का पुनर्निर्माण करने के लिए, हमें मुख्यत: उन शीर्षकों को नहीं देखना चाहिए जिनका उसने सर्वाधिक वर्णन किया है। ऐसा इसलिए क्योंकि उसने अपना अधिकाँश समय उन विषयों के बारे में लिखने में व्यतीत किया जो उसके समय की कलीसिया से संबंधित थे। इसके विपरीत, हमें पूछना है: कौन से सिद्धान्त पौलुस द्वारा लिखी गई विशिष्ट बातों का समर्थन करते हैं? विश्वास के कौन से सुसंगत प्रारूप उसकी विशिष्ट शिक्षाओं का सर्वोत्तम वर्णन करते हैं? कौन से सिद्धान्त उसके द्वारा लिखी गई विभिन्न बातों को विभिन्न कलीसियाओं से जोड़ते हैं? ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के द्वारा, हम पौलुस के धर्मविज्ञान का पुनर्निर्माण कर पायेंगे। और हम अधिक स्पष्टता से समझ सकेंगे कि पौलुस की पत्रियों से पहली सदी की कलीसिया का किस प्रकार मार्गदर्शन करना अपेक्षित था और उन्हें आज हमारा मार्गदर्शन किस प्रकार करना चाहिए।

अब जबकि हमारे पास पौलुस की पृष्ठभूमि और सेवकाई पर कुछ मूलभूत दृष्टिकोण प्राप्त हैं, तो हम सीधे पौलुस के धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों को देखने के लिए तैयार हैं।

मुख्य दृष्टिकोण

इस बिन्दू पर हमें कुछ निर्णायक प्रश्नों को पूछने की आवश्यकता है: पौलुस के धर्मविज्ञान की संरचना क्या थी? उसके द्वारा अपनी पत्रियों में दी गई शिक्षाएं किस प्रकार के विश्वास पर आधारित थी? पौलुस की उचित समझ के लिए इन सवालों के उत्तर नितान्त आवश्यक हैं।

अब, पौलुस इतनी अधिक मसीही परम्पराओं में प्रभावशाली रहा है कि उसके धर्मविज्ञान को समझे जाने की प्रत्येक रीति का वर्णन करना भी असंभव है। हम स्वयं को दो मूलभूत दिशाओं तक सीमित रखेंगे जिन में व्याख्याकार गए हैं: पौलुस के धर्मविज्ञान पर सुधारवादी दृष्टिकोण, और जिसे युगान्त संबंधी दृष्टिकोण कहेंगे, जो हाल के दशकों में प्रभावशाली बना है। आइए पहले हम पौलुस पर सुधारवादी दृष्टिकोण को देखते हैं।

सुधारवाद

प्रोटेस्टेन्ट सुधारवादियों ने पौलुस के धर्मविज्ञान की संरचना को किस प्रकार समझा था? धर्मसुधार आन्दोलन से पूर्व की सदियों में, रोमी कैथोलिक कलीसिया ने सिखाया कि उद्धार के लिए परमेश्वर के अनुग्रह और मानवीय योग्यता दोनों की आवश्यकता थी। इस शिक्षा के अनुसार, धर्मी ठहराया जाना एक लम्बी प्रक्रिया है जिसके द्वारा परमेश्वर विश्वासी को अनुग्रह प्रदान करता है, और यह अनुग्रह अच्छे कार्य करने के द्वारा विश्वासी को अधिक धर्मी बनाता है। जब लोग परमेश्वर की व्यवस्था के प्रमाप के द्वारा वास्तव में धर्मी गिने जाने के लिए पर्याप्त अच्छे कार्य कर लेते हैं तो वे पूर्णत: धर्मी ठहरते हैं और उन्हें उद्धार प्राप्त होता है।

परन्तु जब प्रमुख सुधारवादियों जैसे मार्टिन लूथर, उलरिक ज्विंगली और जाँन काल्विन ने पौलुस की पत्रियों को पढ़ा, तो उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पौलुस की व्यवस्थावादी कैथोलिक व्याख्या गलत थी। वे अगस्टीन की शिक्षा को मानते थे कि धर्मी ठहराया तुरन्त हो जाता है, जो मानवीय कार्यों से पूर्णत: अलग है, और लम्बी अवधि में प्रदान नहीं किया जाता है और न ही मानवीय प्रयासों का मिश्रण है। शुद्धिकरण, मसीही जीवन की लम्बी प्रक्रिया, धर्मी ठहराए जाने के बाद आती है और विश्वासियों के सम्पूर्ण

जीवन में जारी रहती है। परन्तु धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर की एक सर्वकालिक घोषणा है कि विश्वासी को पाप के अपराध से मुक्त कर दिया गया है, और मसीह की धार्मिकता उसे प्रदान की गई है।

यह विश्वास *सोला फीडे* के नाम से प्रसिद्ध हुआ अर्थात - केवल विश्वास के द्वारा - क्योंकि इसके अनुसार हमें केवल मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया है, और विश्वास के साथ हमारे अच्छे कार्यों के द्वारा नहीं। नि:सन्देह, पौलुस की रचनाओं में सुधारवादियों की यह खोज सही थी। आरम्भिक कलीसिया में, कुछ यहूदी विश्वासियों का तर्क था कि उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह और मानवीय कार्यों के मिश्रण का परिणाम है। परन्तु पौलुस ने आरम्भिक कलीसिया में इस व्यवस्थावाद का विरोध किया, और बल दिया कि धर्मी ठहराया जाना एक अद्वितीय घटना है जो व्यवस्था के कार्यों से अलग घटती है। धर्मसुधार आन्दोलन के विवाद और पौलुस द्वारा सामना किए गए विवादों के बीच की समानताएँ पर्याप्त रूप से स्पष्ट हैं। रोमी कैथोलिक कलीसिया का व्यवस्थावाद उन यहूदियों के व्यवस्थावाद के समान ही था। और धर्मसुधार आन्दोलन का *सोला फीडे* पौलुस की शिक्षा के समानान्तर था।

इसके परिणामस्वरूप, मोटे तौर पर प्रोटेस्टेन्ट मसीहियों का मानना है कि पौलुस ने अपने धर्मविज्ञान का विकास मुख्यत: इस विषय के आधार पर किया है कि उद्धार एक विश्वासी पर कैसे लागू किया जाता है। पारम्परिक धर्मविज्ञानी शब्दों में, यह माना जाता था कि पौलुस के धर्मविज्ञान की संरचना *ओर्डो सेल्युटिस,* या उद्धार के क्रम के आधार पर की गई है, जो एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मसीह में मुझे और आपको उद्धार मिलता है। सुधारवाद की परम्परा में, अधिकाँश प्रोटेस्टेन्ट मानते हैं कि *ओर्डो सेल्युटिस,* और विशेषत: केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाना, पौलुस के धर्मविज्ञान का सर्वाधिक केन्द्रिय विचार है। वे विश्वास करते हैं कि यह उसके धर्मविज्ञान का केन्द्र है।

नि:सन्देह, सदियों से प्रोटेस्टेन्ट मसीहियों ने पहचाना है कि पौलुस केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के अलावा और भी बहुत सी बातों पर विश्वास करता था। परमेश्वर के छुटकारे के लम्बे इतिहास में उसकी अत्यधिक रूचि थी जिसका चरमोत्कर्ष मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान था। धर्मविज्ञानी शब्दों में, उसकी शिक्षा के इस पहलू को हम *हिस्टोरिया सेल्युटिस,* या उद्धार का इतिहास कहते हैं। परन्तु अधिकाँशत:, हाल के वर्षों तक पौलुस के धर्मविज्ञान की पारम्परिक समझ यह थी कि उद्धार का इतिहास उद्धार के क्रम से कम महत्वपूर्ण था। अब भी, अधिकाँश प्रोटेस्टेन्ट उद्धार के इतिहास को पौलुस के धर्मविज्ञान के केन्द्र के रूप में नहीं देखते हैं।

युगान्त-संबंधी

पौलुस की व्याख्या में आरम्भिक प्रोटेस्टेन्ट विचार चाहे कितना ही प्रधान रहा हो, लेकिन यह चुनौतियों से परे नहीं रहा है। हाल के वर्षों में एक और पूरक विचार सामने आया है, जिसे हम पौलुस के धर्मविज्ञान पर युगान्त विज्ञान संबंधी दृष्टिकोण कहेंगे। इस दृष्टिकोण ने इस विचार का पुनर्मूल्यांकन किया है कि पौलुस के धर्मविज्ञान में उद्धार के इतिहास की बजाय उद्धार का क्रम अधिक केन्द्रिय था।

यह सत्य है कि हाल के वर्षों में पौलुस के धर्मविज्ञान पर और भी बहुत से दृष्टिकोणों का सुझाव दिए गए है। कुछ प्रमुख धर्मविज्ञानियों का तर्क है कि पौलुस का धर्मविज्ञान मुख्यत: उसकी यहूदी पृष्ठभूमि को यूनानी दर्शनशास्त्रों से मिलाने पर केन्द्रित था। दूसरे पौलुस को इस रूप में देखते हैं कि उसने मुख्यत: तार्किक नैतिक जीवन को शरीर की अभिलाषाओं के ऊपर प्रमुखता दी। कुछ अन्यों ने तर्क दिया है कि पौलुस के धर्मविज्ञान पर यूनानी रहस्यमयी धर्मों या यहूदी प्रकाशनवाद का गहरा प्रभाव है। इनमें से कुछ विचार पौलुस के धर्मविज्ञान में अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हैं, परन्तु इनमें से कोई भी उसके धर्मविज्ञान पर युगान्त विज्ञान संबंधी दृष्टिकोण जितना सहायक साबित नहीं हुआ है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पौलुस के धर्मविज्ञान के युगान्त विज्ञान संबंधी दृष्टिकोण को जाँचने के लिए हम तीन विषयों पर ध्यान देंगे: पहला, युगान्त विज्ञान की शब्दावली; दूसरा, पौलुस के युगान्त विज्ञान की संरचना; और तीसरा, पौलुस के युगान्त विज्ञान के आशय। आइए पहले हम "युगान्त विज्ञान" शब्द को देखते हैं।

शब्दावली

"युगान्त विज्ञान" शब्द यूनानी शब्द *ऐस्केटोस* से आता है, जिसका अर्थ है "आखरी" या "अन्त।" इस प्रकार, युगान्त विज्ञान अन्तिम बातों या अन्त के समय का सिद्धान्त या शिक्षा है। पुराना नियम उद्धार के इतिहास के उस महान चरमोत्कर्ष के बारे में बताने के लिए बारम्बार "अन्त के दिनों" या "अन्त के समयों" जैसे शब्दों का प्रयोग करता है, जो मसीह के पृथ्वी पर आने के समय होने वाला था। और कई अवसरों पर, नया नियम यीशु मसीह में पुराने नियम के इन "अन्त के दिनों" या "अन्त के समयों" की पूर्ति का संकेत देता है। यूनानी शब्द *ऐस्केटोस* के इसी प्रयोग से हमारा धर्मविज्ञानी शब्द "युगान्त विज्ञान," "अन्त के दिनों" या "अन्त के समयों" का सिद्धान्त आता है।

पारम्परिक प्रणालीबद्ध धर्मविज्ञान में, "युगान्त विज्ञान" शब्द मुख्यत: यीशु मसीह के दूसरे आगमन की बाइबल की शिक्षा के बारे में बताता है। परन्तु जब हम पौलुस की "युगान्त विज्ञान संबंधी" विधि की बात करते हैं, तो हमें इस शब्द का विस्तार करना चाहिए कि यह मसीह के दूसरे आगमन से कहीं अधिक के बारे में बताए। जैसा हम देखेंगे, पौलुस ने युगान्त विज्ञान या अन्त के समयों के अर्थों में, मसीह के पहले आगमन से दूसरे आगमन तक, मसीह के बारे में सब कुछ समझ लिया था।

संरचना

यह देखने के लिए कि मसीह के दूसरे आगमन से अधिक बातों को शामिल करने के लिए हम किस प्रकार "युगान्त विज्ञान" शब्द को विस्तार दे रहे हैं, हमें अपना ध्यान पौलुस के युगान्त विज्ञान की संरचना पर लगाना होगा। पौलुस ने अन्त के दिनों या अन्त के समयों को कैसे समझा? इस शीर्षक पर हमारी खोज तीन भागों में विभाजित होगी : उत्पत्ति, विकास, और पौलुस के युगान्त विज्ञान के विषय। आइए पहले हम पौलुस के युगान्त विज्ञान की उत्पत्ति को देखते हैं।

आरम्भ। पौलुस के समय में, यहूदी धर्मविज्ञानियों का सामान्यत: यह विचार था कि पुराना नियम संसार के इतिहास को दो बड़े युगों में बाँटता है। इनमें से पहला पाप और समस्या का वर्तमान युग था, जिसे उन्होंने "यह युग," या इब्रानी में, *ओलाम हज़ेह* कहा। "यह युग" इस्राएल द्वारा प्रतिज्ञा के देश से निर्वासन के परमेश्वर के श्राप को झेलने में अपने निम्नतम बिन्दू तक पहुँचा। कोई आश्चर्य नहीं, कि यहूदी धर्मविज्ञानियों ने "इस युग" के बारे में अत्यधिक नकारात्मक शब्दों का प्रयोग किया।

परन्तु रब्बियों का यह विश्वास भी था कि समस्या के इस युग के बाद भविष्य में आशीष का एक युग आएगा। उन्होंने इस भावी युग को "आने वाला युग," या इब्रानी में *ओलाम हबा* कहा। आने वाले युग में, परमेश्वर इस्राएल को दी जाने वाली आशीषों के अपने सारे वायदों को पूरा करेगा।

पौलुस के समय के अधिकाँश यहूदी समूहों का विश्वास था कि मसीह का प्रकट होना इन दोनों युगों के बीच एक निर्णायक मोड़ होगा। जब मसीह आएगा, वह यहोवा के दिन को लाएगा, जिस दिन परमेश्वर अन्तत: अपने लोगों को आशीष देगा और अपने शत्रुओं को नाश करेगा। यह दिन आने वाले युग की शुरूआत करेगा।

जब हम पौलुस की पत्रियों को पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वह भी इतिहास के इस दो युग के विचार को मानता था। वास्तव में, उसने कम से कम बारह अवसरों पर उस समय को प्रत्यक्ष रूप से "इस युग" कहा जिस में वह रहता था। उदाहरण के लिए, 2 कुरिन्थियों अध्याय 4 पद 4 में पौलुस शैतान को "इस युग का ईश्वर" कहता है। और 1 कुरिन्थियों अध्याय 1 पद 20 में वह गैरयहूदी दार्शनिकों को "इस युग के दार्शनिक" कहता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इसी प्रकार, पौलुस "आने वाले युग" की अभिव्यक्ति का प्रयोग भविष्य के उस समय को बताने के लिए करता है जब मानव जाति का अन्तिम न्याय होगा और उन्हें आशीष मिलेगी। उदाहरण के लिए, 1 तिमुथियुस अध्याय 6 पद 19 में पौलुस विश्वासियों को प्रेरित करता है कि वे विश्वासयोग्य रहें ताकि वे "आने वाले युग में अपने लिए एक मजबूत नींव" डाल सकें। और इफिसियों अध्याय 2 पद 7 में उसने कहा कि परमेश्वर ने मसीह को मृतकों में से जिलाया कि "आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।"

संभवत: पौलुस के दो युगों वाले विचार का सर्वोत्तम उदाहरण इफिसियों अध्याय 1 पद 21 में आता है। वहाँ वह स्पष्ट रूप से दोनों युगों के बारे में बताता है जब उसने कहा कि

> मसीह को सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया। *(इफिसियों 1:21)*

इस मूलभूत दो युग के प्रारूप को ध्यान में रखते हुए, अब हमें उस तरीके की तरफ बढ़ना चाहिए जिससे पौलुस ने विशिष्ट मसीही युगान्त विज्ञान का विकास किया।

विकास। आपको याद होगा कि पारम्परिक यहूदी युगान्त विज्ञान में इस युग और आने वाले युग के बीच एक मोड़ आएगा जो मसीह के प्रकट होने के साथ घटना था। सदियों से यहूदियों का विश्वास था कि मसीह के आने पर लोगों को तुरन्त उसकी पूर्ण आशीषें प्राप्त होंगी, जबकि उसके शत्रु तुरन्त नाश हो जायेंगे। परन्तु, यीशु के अनुयायी के रूप में, पौलुस ने इस पुराने विश्वास के प्रति गम्भीर चुनौती का सामना किया। वह जानता था कि यीशु इस्राएल का मसीह था - परन्तु वह यह भी जानता था कि यीशु संसार को चरम अन्त पर नहीं लाया था जैसे इस्राएल ने अपेक्षा रखी थी। स्वयं यीशु के समान, और शेष नये नियम के समान, पौलुस ने इस समस्या का उत्तर पारम्परिक यहूदी युगान्त विज्ञान में संशोधन करके दिया।

जैसे पौलुस ने इसे समझाया कि इस युग से आने वाले युग में प्रवेश साधारण बदलाव नहीं था। इसकी बजाय, इसमें एक परस्पर व्यापन का समय शामिल था जिसमें दोनों युगों का समय एक साथ चलता है। उसके दृष्टिकोण से, आने वाले युग का शुभारम्भ मसीह की मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा हो चुका है। पौलुस को यह भी निश्चय था कि मसीह के महिमा में लौटने पर, इस बुरे युग का अन्त होगा और आने वाला युग अपनी पूर्णता तक पहुँचेगा, जिसमें परमेश्वर के लोगों को आशीषें मिलेंगी और उसके शत्रुओं का अन्तिम न्याय होगा। परन्तु, इसके बीच, दोनों युग, यह युग और आने वाला युग, दोनों एक साथ विद्यमान रहते हैं।

पौलुस के युगान्त विज्ञान की उत्पत्तियों और संरचना के विकास को ध्यान में रखते हुए, पौलुस की पत्रियों में कुछ विषयों का वर्णन करना सहायक होगा जिन्हें इतिहास के युगों के परस्पर व्यापन के अर्थों में समझा जाना चाहिए।

विषय। पौलुस के युगान्त विज्ञान के विचार का "पहले से और अभी नहीं" के रूप वर्णन करना सामान्य बात बन चुकी है, क्योंकि पौलुस का विश्वास था कि अन्त के समयों या अन्त के दिनों के कुछ पहलू मसीह में पहले से ही यथार्थ बन चुके थे, जबकि दूसरे पहलू अभी पूर्ण नहीं हुए हैं। आइए हम इस विवरण का अर्थ देखते हैं।

एक तरफ, पौलुस के अनुसार, आने वाला युग कई अर्थों में पहले से ही विद्यमान है। हम उन तीन रीतियों का वर्णन करेंगे जिन में यह विषय पौलुस की रचनाओं में आता है। पहले स्थान में, पौलुस ने सिखाया कि परमेश्वर के राज्य का अन्तिम चरण उस समय शुरू हुआ जब यीशु अपने स्वर्गीय सिंहासन पर बैठ गया। उदाहरण के लिए, इफिसियों अध्याय 1 पद 20 से 21 में पौलुस ने लिखा कि जब पिता ने मसीह को मृतकों में से जिला उठाया, उसने उसे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में पर आने वाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया। *(इफिसियों 1:20-21)*

यद्यपि वर्तमान समय में मसीह का राज्य मुख्यत: पृथ्वी की बजाय स्वर्गीय स्थानों में पूर्ण हुआ है, लेकिन यह अब भी सत्य है कि मसीह पहले से ही सारी प्रधानताओं और अधिकारों पर राज्य करता है। इस अर्थ में, आने वाले युग में परमेश्वर का राज्य एक वर्तमान यथार्थ है।

आने वाले युग का दूसरा पहलू जो पहले से ही हमारे साथ उपस्थित है वह पवित्र आत्मा में हमारी अनन्त मीरास का स्वाद। पौलुस ने सिखाया कि जब मसीह स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठा, उसने पवित्र आत्मा को कलीसिया पर उस पूर्ण मीरास के स्वाद के रूप में उण्डेला जिसे हम मसीह के वापस लौटने पर प्राप्त करेंगे। रोमियों अध्याय 8 पद 23 में, पौलुस ने यह कहते हुए इसे समझाया कि विश्वासी वे हैं "जिनमें आत्मा का पहला फल है।" "पहला फल" यूनानी शब्द, *अपार्के* का अनुवाद है, जो स्वयं पुराने नियम के शब्द का अनुवाद है जो फसल के पहले हिस्से को बताता है। पहला फल संकेत देता था कि भविष्य में एक बड़ी फसल आ रही है। अत: पौलुस के लिए, प्रत्येक विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा का दान आने वाले युग की महान आशीषों का स्वाद मात्र है।

इसी प्रकार, इफिसियों अध्याय 1 पद 14 के अनुसार, पवित्र आत्मा स्वयं

> उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो। (इफिसियों 1:14)

"बयाना" यूनानी शब्द *आराबोन* का अनुवाद है। यह शब्दावली संकेत देती है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर द्वारा हमें दी गई पहली किश्त या जमा है, जो गारण्टी देती है कि भविष्य में हम परमेश्वर से बहुत अधिक प्राप्त करेंगे। एक बार फिर, पवित्र आत्मा आने वाले युग की आशीष है जिसे परमेश्वर ने पहले से ही हमें दे दिया है।

अन्तत:, पौलुस ने इस तथ्य का भी संकेत दिया कि मसीह ने आने वाले युग से संबंधित नई सृष्टि का आरम्भ कर दिया था। मसीह के कार्य के कारण, विश्वासी अब आँशिक रूप में संसार की पुनर्सृष्टि का आनन्द लेते हैं। पुराने नियम में, परमेश्वर ने अपने लोगों से प्रतिज्ञा की थी कि अन्त के दिनों में वह संसार की पूर्णत: पुनर्सृष्टि करेगा, और उसे पाप से पूर्व की अदन की वाटिका के समान सिद्ध बना देगा। देखें यहोवा, यशायाह अध्याय 65 पद 17 में यशायाह से आने वाले युग का वर्णन किस प्रकार करता है:

> देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूँ। *(यशायाह 65:17)*

पौलुस के मन में, यह तथ्य कि मसीह पहले से ही लोगों को उद्धार दे रहा था इस बात को साबित करता था कि संसार की पुनर्सृष्टि का आरम्भ हो चुका था। 2 कुरिन्थियों अध्याय 5 पद 17 इस विचार को अच्छी तरह अभिव्यक्त करता है:

> इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं। *(2 कुरिन्थियों 5:17)*

यद्यपि पौलुस ने सिखाया कि आने वाले युग के बहुत से पहलुओं का आरम्भ पहले ही हो गया था जब मसीह पहली बार आया था, लेकिन पौलुस का यह विश्वास भी था कि अन्त के दिनों की आशीषें अभी अपनी पूर्णता में नहीं आई थीं। अत:, वह मसीह के वापस लौटने के समय को ऐसे समय के रूप में देखता है जब मसीह अन्तिम न्याय और आशीषों को पूर्ण करेगा। एक बार फिर, हम तीन रीतियों का वर्णन करेंगे जिनमें पौलुस का दृष्टिकोण दिखाई देता है।

पहले स्थान में, जैसा हम देख चुके हैं, पौलुस ने सिखाया कि मसीह, राजा अब स्वर्ग में अपने सिंहासन से राज्य कर रहा है। परन्तु पौलुस यह विश्वास भी करता था कि जब मसीह लौटेगा तो वह परमेश्वर के राज्य की पूर्णता को लाएगा। देखें 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 पद 24 से 26 में वह इसे कैसे बताता है:

> इसके बाद अन्त होगा। उस समय (मसीह) सारी प्रधानता, और सारा अधिकार, और सामर्थ का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। क्योंकि जब तक वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। सब से अन्तिम बैरी जो नष्ट किया जाएगा, वह मृत्यु है। *(1 कुरिन्थियों 15:24-26)*

यह पद्यांश स्पष्ट करता है कि पौलुस मसीह के वर्तमान राज्य से आगे भविष्य में सारी प्रधानताओं, अधिकार और सामर्थ के नाश को देख रहा था जो परमेश्वर के उद्देश्यों के विरूद्ध खड़ी हैं। मसीह तब तक अपने स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान रहेगा जब तक मृत्यु सहित, हर शत्रु नष्ट न हो जाए। अत: एक अर्थ में, पौलुस का विश्वास था कि मसीह का राज्य पहले से ही है, परन्तु दूसरे अर्थ में, उसका विश्वास था कि यह अभी यहाँ नहीं आया है।

दूसरा, जैसा हमने देखा, पौलुस का विश्वास था कि पवित्र आत्मा उद्धार की फसल का पहला फल, और हमारी मीरास का बयाना है। परन्तु “पहला फल” और “बयाना” शब्द संकेत देते हैं कि हमारी मीरास की पूर्ण प्राप्ति भविष्य में है। देखें रोमियों अध्याय 8 पद 23 में पौलुस इसे किस प्रकार बताता है:

> और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं, और लेपालक होने की अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं। *(रोमियों 8:23)*

यहाँ पौलुस ने पवित्र आत्मा के दान की वर्तमान वास्तविकता को प्रत्यक्ष रूप में भविष्य से जोड़ा। क्योंकि आने वाला युग पहले से ही यहाँ है, इसलिए हम में पहले से ही आत्मा है। परन्तु अब भी हम कराहते हैं क्योंकि हमने अभी तक अपनी देह के छुटकारे को प्राप्त नहीं किया है।

कुछ इसी प्रकार, इफिसियों अध्याय 1 पद 14 में पौलुस ने लिखा कि पवित्र आत्मा

> उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो। *(इफिसियों 1:14)*

आत्मा एक अद्भुत स्वाद है, परन्तु केवल स्वाद, उस महान छुटकारे का: हमारी सम्पूर्ण मीरास का।

अन्ततः, यद्यपि नई सृष्टि विश्वासियों के जीवन में एक आत्मिक यथार्थ बन चुकी है, लेकिन हम सृष्टि के पूरी तरह नये हो जाने और नई पृथ्वी पर हमारे अनन्त राज्य की भी बाट जोहते हैं। जैसे पौलुस ने रोमियों अध्याय 8 पद 21 में लिखा, जब हम अपनी नई देहों को प्राप्त करते हैं उसी समय,

> सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। *(रोमियों 8:21)*

पौलुस मसीह के पुन: आगमन को ऐसे समय के रूप में देखता है जब नई सृष्टि अपनी सारी पूर्णता में आएगी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हमने केवल कुछ ही रीतियों को छूआ है जिनके द्वारा पौलुस इस युग और आने वाले युग के अर्थ में महत्वपूर्ण विषयों को बताता है। परन्तु यह मूलभूत प्रारूप का रेखाचित्र है जो उसके सारे दृष्टिकोणों को आधार है। आने वाला युग विश्वासियों के लिए बहुत सी आशीषों के साथ एक वर्तमान यथार्थ है। परन्तु जब तक मसीह अपनी महिमा में न आए, तब तक यह युग पूरी तरह समाप्त नहीं होगा और आने वाला युग अपनी पूर्णता तक नहीं पहुँचेगा। इस दौरान, इस युग की समस्याएँ और अगले युग की आश्चर्य साथ-साथ विद्यमान रहेंगे।

पौलुस की युगान्त विज्ञान की संरचना को देखने के पश्चात्, हमें उसके विचारों के कुछ महत्वपूर्ण आशयों की ओर मुड़ना चाहिए।

निहितार्थ

जैसा हम देख चुके हैं, पौलुस ने अपने धर्मविज्ञान को मोटे तौर पर पासबान की सेवकाई के सन्दर्भ में अभिव्यक्त किया। उसने अमूर्त धर्मविज्ञान पर नहीं, बल्कि ठोस मानवीय अनुभव पर ध्यान केन्द्रित किया। उसका युगान्त विज्ञान भी अमूर्त नहीं था। बल्कि, पौलुस का विश्वास था कि कलीसिया की बहुत सी समस्याओं का कारण इस युग और आने वाले युग के एक साथ बने रहने के दौरान जीने का तनाव है। इसलिए अपनी रचनाओं में, पौलुस ने समझाया कि परमेश्वर ने अपने पहले आगमन में विश्वासियों के लिए क्या किया था, और मसीहियों को सिखाया कि उन्हें अपना जीवन कैसे बिताना चाहिए जब वे मसीह के आगमन की प्रतीक्षा में हैं।

पौलुस के युगान्त विज्ञान के इस व्यवहारिक केन्द्र को खोलने के लिए, हम तीन शीर्षकों को देखेंगे: पहला, मसीह के साथ एकता; दूसरा, दिव्य उद्देश्य; और तीसरा, मसीही आशा। आइए पहले हम मसीह के साथ एकता के बारे में पौलुस की शिक्षा को देखते हैं।

मसीह के साथ एकता। रोमियों अध्याय 6 पद 3 और 4 में, पौलुस ने संकेत दिया कि मसीह के साथ हमारी एकता वास्तव में हमें इस युग से अगले युग में ले जाती है। बपतिस्मा के अर्थ में पुन: मसीह के साथ एकता के बारे में लिखते हुए, पौलुस पूछता है:

> क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। ***(रोमियों 6:3-4)***

आसान शब्दों में, इस युग से आने वाले युग तक जाने का जो कार्य हुआ वो मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के दौरान ही हुआ। परन्तु हर बार जब पुरूष और स्त्रियाँ उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास करते हैं, तो वे उसके साथ उसके पुनरूत्थान में भागी होते हैं। इसके परिणामस्वरूप, अब हम पाप के दासत्व और उसके विरूद्ध परमेश्वर के दण्ड में नहीं जीते हैं। हमें नये जीवन दिए गए हैं, पुनरूत्थान प्राप्त जीवन, जिससे हम मसीह की सेवा की स्वतंत्रता में जी सकें। जैसे पौलुस रोमियों 6 पद 10 और 11 में आगे समझाता है:

> क्योंकि (मसीह) जो मर गया तो पाप के लिए एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है तो परमेश्वर के लिए जीवित है। ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो। ***(रोमियों 6:10-11)***

मसीह के साथ हमारी एकता के बारे में पौलुस की शिक्षा ने युगान्त विज्ञान को सारे विश्वासियों की व्यवहारिक जीवनों में लागू किया। जिस प्रकार यीशु इस युग और इसके न्याय को पीछे छोड़ गया, उसी

प्रकार हमें भी पाप और न्याय से छुटकारा दे दिया गया है। और जिस प्रकार यीशु अब आने वाले युग की सामर्थ में जीवित है, उसी प्रकार हम भी उसी सामर्थ में जीते हैं।

यह समझने के पश्चात् कि विश्वास के द्वारा मसीह के साथ हमारी एकता ने किस प्रकार हमें नया जीवन दिया है, हम एक कठिन प्रश्न का सामना करते हैं: परमेश्वर ने इस युग और आने वाले युग के बीच दोहराव की अवधि को क्यों रखा है? परमेश्वर का उद्देश्य क्या है?

ईश्वरीय उद्देश्य। गैरयहूदियों के बीच में पौलुस का अपना मिशनरी कार्य उसके इस विश्वास की गवाही देता है कि दो युगों के एक साथ बने रहने या उसके परस्पर व्यापन के विषय परमेश्वर की योजना में विश्वास करने वाले यहूदियों और गैरयहूदियों को परमेश्वर के लोगों के रूप में एक बनाना शामिल है।

पौलुस का यह विश्वास भी था कि परमेश्वर ने इस युग और आने वाले युग को परस्पर बने रहने इसलिए दिया ताकि कलीसिया आत्मिक परिपक्वता की पूर्णता तक पहुँच सके। कभी वह इस विचार को परमेश्वर के मन्दिर के निर्माण के अर्थों में बताता है, जैसे इफिसियों अध्याय 2 पद 19 से 22 में। दूसरे समयों पर, वह इसके बारे में बढ़ते हुए मानवीय शरीर के अर्थ में बताता है, जैसे इफिसियों अध्याय 4 पद 15 और 16 में। पौलुस ने समझ लिया था कि इस युग और आने वाले युग को एक साथ बढ़ते रहने के लिए परमेश्वर के केन्द्रिय उद्देश्यों में से एक कलीसिया का आत्मिक रूप से परिपक्व होना था।

पौलुस ने पहचान लिया कि इतिहास का यह दृष्टिकोण असामान्य था। यह अतीत में प्रकट नहीं हुआ था। इसी कारण वह इसे एक रहस्य कहता है जिसे परमेश्वर ने उस पर प्रकट किया था और जिसको उसे दूसरों को बताना था। रोमियों अध्याय 11 पद 25 में, पौलुस ने इन वचनों को लिखा:

> मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो कि जब तक गैरयहूदीयाँ पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा। *(रोमियों 11:25)*

इस पद्यांश में पौलुस ने संकेत दिया कि परमेश्वर इस वर्तमान समय, जब बहुत से यहूदियों ने अपने आप को सुसमाचार के प्रति कठोर कर लिया है, का प्रयोग करके गैरयहूदियों की "पूरी संख्या" या "पूर्णता" को उद्धार दे रहा है। जैसे उसने इफिसियों अध्याय 3 पद 4 से 6 में संकेत दिया:

> जिससे तुम पढ़कर जान सकते हो कि मैं मसीह का वह भेद कहाँ तक समझता हूँ। जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रकट किया गया है। अर्थात् यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं। *(इफिसियों 3:4-6)*

परमेश्वर के उद्देश्यों पर पौलुस के दृष्टिकोण ने इस युग और आने वाले युग दोनों में ही रहने वाले सारे विश्वासियों के लिए एक दिशा निर्धारण उपलब्ध करवाया। सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर, मसीहियों को इस समय को शांत रहकर सह लेना चाहिए और आने वाले युग की पूर्णता के समय को प्रतीक्षा के समय के रूप में नहीं देखना चाहिए। इसके विपरीत, परमेश्वर ने इस अवधि को महान गतिविधि के लिए बनाया है। यह संसार की प्रत्येक जाति से बहुत से लोगों को बचाने का और कलीसिया को आत्मिक परिपक्वता में लाने का समय है। इसी कारण, पौलुस ने अपना जीवन सुसमाचार को फैलाने और कलीसिया को बनाने में समर्पित कर दिया, और उसने दूसरों को उस कार्य में अपने साथ जुड़ने के लिए बुलाया।

इस युग और आने वाले युग के इस परस्पर व्यापन के दौरान मसीह के साथ हमारी एकता के बारे में पौलुस की शिक्षा उन मसीहियों के लिए आशा का आवश्यक स्रोत भी उपलब्ध कराती है जो जीवन की चुनौतियों से संघर्ष करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मसीही आशा। प्रेरित के रूप अपनी स्वयं की सेवकाई में पौलुस ने अत्यधिक कष्ट का अनुभव किया था, और वह जानता था कि सारे मसीही किसी न किसी प्रकार कष्ट सहते हैं। परन्तु पौलुस के युगान्त विज्ञान ने कम से कम दो रीतियों में मसीहियों को आशा प्रदान की।

एक तरफ, पौलुस का युगान्त विज्ञान यह संकेत देने के द्वारा हमें भविष्य के लिए आशा देता है कि हमने आने वाले युग के बहुत से लाभों का पहले से ही आनन्द लेना शुरू कर दिया है। जब हम अपने जीवनों पर नजर डालते हैं और आने वाले युग की उन आशीषों को देखते हैं जो पहले से ही हमारे पास हैं, तो यह हमें आशा देता है कि भविष्य में हम और भी महान और पूर्ण आशीषों को प्राप्त करेंगे। जैसे पौलुस ने 2 कुरिन्थियों अध्याय 4 पद 16 से 18 में लिखा:

> इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है... और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं... *(2 कुरिन्थियों 4:16-18)*

दूसरी तरफ, वे आशीषें जो अब भी हमारे सामने हैं वे इतनी अद्‌भुत हैं कि वे इस जीवन में हमारे द्वारा सही जाने वाली सारी परीक्षाओं को पूरी तरह ढाँप लेती हैं। इसी विश्वास के कारण पौलुस ने रोमियों अध्याय 8 पद 18 में लिखा कि

> इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रकट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं। *(रोमियों 8:18)*

हमारे वर्तमान कष्ट केवल अस्थाई हैं। यीशु अन्ततः इस वर्तमान दुष्ट युग को समाप्त करेगा और संसार को अपनी संतानों के लिए महिमामय दान के रूप में नया बनाएगा।

पौलुस ने माना कि इस जीवन की समस्याओं के कारण हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है, परन्तु उसने यह घोषणा भी की कि हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है क्योंकि आने वाले युग की आशीषें पहले ही हमें मिल चुकी हैं। पाप से मुक्ति और आत्मा की सामर्थ हमें प्रतिदिन इस भीतरी नयेपन में आनन्दित होने में सक्षम बनाती है जिससे हम अपनी आँखें मसीह में हमारी अनन्त आशा पर लगा सकते हैं। आने वाले युग का हमारा स्वाद हमारी सहायता करता है कि हम उस पूर्ण भोज की बाट जोहें जो मसीह के आगमन पर हमारे लिए रखा गया है।

निष्कर्ष

इस अध्याय में हमने पौलुस और उसके धर्मविज्ञान पर एक संक्षिप्त नजर डाली। हमने देखा कि किस प्रकार पौलुस की पृष्ठभूमि ने उसके धर्मविज्ञान पर गहरी छाप छोड़ी, और कैसे उसकी प्रेरित की सेवकाई उसके मसीही विश्वासों से संबंधित थी। पौलुस के युगान्त विज्ञान का अध्ययन करने के द्वारा हमने उसके धर्मविज्ञान के मुख्य केन्द्र के बारे में भी कुछ महत्वपूर्ण अन्तर्दृष्टियों को प्राप्त किया। इन दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए, हम आगामी अध्यायों में पौलुस के जीवन और उसकी पत्रियों को गहराई से देखने के लिए बेहतर रीति से तैयार होंगे। हमें न केवल उस बात की बेहतर समझ प्राप्त होगी जो पौलुस ने अपने समय में आरम्भिक कलीसिया को सिखाया, बल्कि हम अधिक स्पष्टता से यह देखने में भी सक्षम होंगे कि उसकी शिक्षाओं का आज हमारे लिए क्या अर्थ है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।